कैनविज टाइम्स
लखनऊ
2 शनिवार, 17 अक्टूबर 2015

9 अरब का पेट भरने को जरूरी होगा 70% अधिक खाद्यान्न

2050 के भारत की तस्वीर

❐ विश्व खाद्य दिवस पर नई गन्ना किस्म के बीज का निःशुल्क किए गये वितरित

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर भूख एवं कुपोषण को समाप्त करने के लिए शुक्रवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ में गन्ना बीज जागरूकता कार्यक्रम पर विशेष आयोजन किया गया। डॉ. सुशील सोलोमन संस्थान के भूतपूर्व निदेशक मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि कृषि एक बहुआयामी तथा वृहद क्षेत्र है जिसके विकास से दुनिया में गरीबी एवं कुपोषण को कम किया जा सकता है।

शुक्रवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान में कृषक जागरूकता पर बोलते वक्ता। कैनविज टाइम्स

सन 2050 तक 9 अरब की जनसंख्या का पेट भरने के लिए लगभग 70% तक ज्यादा खाद्यान उत्पादन करने की जरूरत पड़ेगी। जिसके लिए कृषि उत्पादकता बढ़ाना जरूरी है। आगन्तुक कृषकों (250-300) को संस्थान द्वारा विकसित नई गन्ना किस्म कोलख 9709 का बीज निःशुल्क दिया गया। इस अवसर पर कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिसमें मुख्य रूप से आगंतुक कृषकों का संस्थान के शोध व तकनीकी प्रदर्शन प्रक्षेत्रों तथा विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण कराया गया। जिसका मुख्य उदेश्य किसानों को नई किस्मों के गुणों के बारे में (उपज क्षमता, संस्तुत क्षेत्र, स्वस्थ बीज उत्पादन तथा आवश्यक कृषि कार्य) परिचित कराकर उनमें इन किस्मों की खेती में रुचि पैदा करना है। संस्थान के निदेशक डॉ.टीके श्रीवास्तव ने कहा कि भूख मिटाकर ही सामाजिक सुरक्षा का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। निरंतर गिरता मृदा स्वास्थ्य भी चिंता का विषय है इस दिशा में भी किसानों को रसायनिक उर्वरकों की मात्रा को कम करके जैविक खादों के प्रयोग को बढ़ावा देना होगा। इस विषय पर भी संस्थान किसानों को जागरूक कर रहा है तथा विभिन्न क्षेत्रों में मिट्टी की जांच कर मृदा स्वास्थ कार्ड बनाने का काम वृहत स्तर पर किया जा रहा है।

'कृषि के विकास से रोका जा सकता है कुपोषण'

कल्पतरु समाचार सेवा

■ भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में संगोष्ठी का आयोजन

लखनऊ। विश्व खाद्य दिवस पर शुक्रवार को भूख एवं कुपोषण को समाप्त करने को लेकर भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस दौरान संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने कहा कि कृषि के विकास से दुनिया में गरीबी एवं कुपोषण को कम किया जा सकता है। सन् 2050 तक नौ अरब की जनसंख्या का पेट भरने के लिए लगभग 70 प्रतिशत तक ज्यादा खाद्यान उत्पादन करने की जरूरत पड़ेगी। इसके लिए कृषि उत्पादकता बढ़ाना जरूरी है। कार्यक्रम में लगभग 250 किसानों को संस्थान द्वारा नई गन्ना किस्म कोलख बीज वितरित किया गया।

संगोष्ठी में विकसित तकनीकों पर वैज्ञानिकों द्वारा विस्तार पूर्वक जानकारी देने के साथ ही खेतों में अपनाने के लिए प्रयोगिक जानकारी से अवगत कराया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. टीके श्रीवास्तव ने कहा कि भूख मिटाकर ही सामाजिक सुरक्षा का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। गन्ना उपज बढ़ाने के लिए किसानों को नई किस्मों जैसे कोलख 94184, कोलख 9709, कोपीके 05191, को. 0238, को. 0118, को 05011, को. ह. 128की खेती करनी होगी । निरंतर गिरता मृदा स्वास्थ पर चिंता जताते हुए किसानों को रसायनिक उर्वरकों की जगह जैविक खादों के प्रयोग को बढ़ावा देना होगा। मिट्टी की जांच कर मृदा स्वास्थ कार्ड बनाने का काम वृहत स्तर पर किया जा रहा है। संस्थान में प्रसार व प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. ए. के. साह ने बताया कि भारत में गन्ना की लगभग 600 किस्मों को विकसित किया गया है, जबकि लगभग 30-35 किस्मों को ही किसानों द्वारा प्रयोग में लाया जा रहा है। किसानों द्वारा पिछले 15-20 वर्षों से दो-तीन किस्मों को ही विशेष रूप से लगाया जा रहा है। गोष्ठी में वैज्ञानिक डॉ. ज़े. सिंह, डॉ. शिवनायक सिंह, डॉ. रामजी लाल ने भी आधुनिक खेती के बारे में जानकारी दी।

लखनऊ • शनिवार • 17 अक्तूबर 2015 हिन्दुस्तान

गन्ने की उन्नत किस्मों की जानकारी दी

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने गन्ने की खेती में तकनीकी प्रायोगिक जानकारी से किसानों को रूबरू कराया।

शुक्रवार को रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान में भूख और कुपोषण को समाप्त करने के लिए किसानों के सामूहिक प्रयास पर बल दिया गया है। संस्थान में गन्ना उत्पादन तकनीक प्रदर्शन एवं गोष्ठी तथा गन्ना बीज जागरूकता कार्यक्रम पर विशेष आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि पूर्व निदेशक गन्ना अनुसंधान संस्थान डॉ. सुशील सोलोमन ने कृषि वैज्ञानिकों से अपील की कि गन्ना में विकसित तकनीक किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रयास की जरूरत है। संस्थान में प्रसार व प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. एके शाह ने इस अवसर पर किसानों को खेतों में मिट्टी की जांच, रासायनिक खादों का कम से कम प्रयोग, जैविक खादों का प्रयोग व कम लागत में अधिक उत्पादन के बारे में बताया। किसानों को नई प्रजाति कोलख-9709 गन्ने का बीज और जैविक खाद निःशुल्क दी गई।

1937 > आश्विन शुक्ल 4 विक्रम 2072 YOUNG INDIA > YOUNG PAPER पेज 24 > मूल्य सिर्फ 2.50 रु.

NBT
नवभारत टाइम्स

छह पैसेंजर ट्रेनें रद P4

www.nbt.in

गेम चेंजर बनेगी बाले

खाद्य दिवस पर किसानों को बांटी खाद

■ एनबीटी, लखनऊ : विश्व खाद्य दिवस के मौके पर गन्ना अनुसंधान संस्थान में शुक्रवार को गन्ना उत्पादन तकनीक प्रदर्शन, गोष्ठी और बीज जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में शिरकत करने संस्थान पहुंचे किसानों को शोध, तकनीक के बारे में जानकारी दी गई। इसके साथ ही किसानों को गन्ना की प्रजाति 9709 और जैविक खाद फ्री में दी गई। इस दौरान गन्ना संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन, गन्ना संस्थान के निदेशक डॉ. टीके श्रीवास्तव, वैज्ञानिक डॉ. जे सिंह, डॉ. शिवनायक सिंह, डॉ. रामजीलाल, डॉ. एके सिंह, डॉ. माया राम सिंह ने किसानों के विभिन्न मुद्दों पर अपनी बात रखी। कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. आरके सिंह मौजूद रहे। उन्होंने किसानों को गन्ने की उन्नत किस्मों के बारे में बताया और उनके ही इस्तेमाल की बात कही7

जनसंदेश टाइम्स

लखनऊ, शनिवार, 17 अक्टूबर 2015

कृषि का विकास खत्म करेगा दुनिया से कुपोषण

कृषकों को कराया गया परिसर का भ्रमण

आइआइएसआर में विश्व खाद्य दिवस पर आयोजित गोष्ठी में उपस्थित संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ,साथ में मौजूद संस्थान के निदेशक व अन्य वैज्ञानिकगण।

लखनऊ। विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर भूख एवं कुपोषण को समाप्त करने के लिए सामूहिक प्रयास की ओर अग्रसर होते हुए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में शुक्रवार को गन्ना उत्पादन तकनीक प्रदर्शन, गोष्ठी व गन्ना बीज जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर संस्थान के पूर्व निदेशक व मुख्यअतिथि ने डॉ. सुशील सोलोमन ने कहा कि कृषि एक बहुआयामी तथा वृहत क्षेत्र है जिसके विकास से दुनिया में गरीबी एवं कुपोषण को कम किया जा सकता है। सन् 2050 तक 9 अरब की जनसंख्या का पेट भरने के लिए लगभग 70 प्रतिशत तक ज्यादा खाद्यान उत्पादन करने की जरूरत पड़ेगी जिसके लिए कृषि उत्पादकता बढ़ाना जरूरी है।

इस मौके पर कई कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें मुख्य रूप से आगंतुक कृषकों का संस्थान के शोध,तकनीक की प्रदर्शन प्रक्षेत्रों व विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण कराया गया। भ्रमण में संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों पर वैज्ञानिकों द्वारा विस्तार पूर्वक जानकारी दिया गया तथा उन तकनीकों को खेतों में अपनाने के लिए प्रयोगिक जानकारी से कृषकों को रूबरू कराया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. टी के श्रीवास्तव ने कहा कि भूख मिटाकर ही सामाजिक सुरक्षा का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। उन्होने किसानों से अपील करते हुए कहा कि गन्ना उपज बढ़ाने के लिए किसानों को पुरानी तथा कम उपज देने वाली गन्ना किस्मों की जगह नई किस्में जैसे कोलख 94184, कोलख 9709, कोपीके 05191, को. 0238, को. 0118, को 05011, को ह. 128 इत्यादि की खेती वृहत स्तर पर करनी होगी । निरंतर गिरता मृदा स्वास्थ भी चिंता का विषय है इस दिशा में भी किसानों को रसायनिक उर्वरकों की मात्रा को कम करके जैविक खादों के प्रयोग को बढ़ावा देना होगा। इस विषय पर भी संस्थान किसानों को जागरूक कर रहा है तथा विभिन्न क्षेत्रों में मिट्टी की जांच कर मृदा स्वास्थ कार्ड बनाने का काम वृहत स्तर पर किया जा रहा है।

गोष्ठी

2050 तक नौ अरब जनसंख्या का पेट भरने को सत्तर प्रतिशत खाद्यान्न की होगी आवश्यकता

संस्थान में प्रसार व प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. ए. के. साह ने इस अवसर पर जानकारी देते हुए बताया कि भारत में गन्ना की अब तक लगभग 600 किस्मों को विकसित किया गया है, जबकि लगभग 30-35 किस्मों को ही किसानों द्वारा प्रयोग में लाया जा रहा है। उन्होने कहा कि किसानों द्वारा पिछले 15-20 वर्षों से दो-तीन किस्मों को ही विशेष रूप से लगाया जा रहा है। कृषक गोष्ठी कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों जैसे डॉ. जे. सिंह, डॉ. शिवनायक सिंह, डॉ. रामजी लाल, डॉ. ए. के. सिंह, तथा डॉ. महाराम सिंह ने विभिन्न विषयों पर किसानों को जानकारी दिया व इस गोष्ठी का संचालन डॉ. श्रीमति दीक्षा जोशी के द्वारा किया गया। *वसं.*